

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री भगवान गणेश नमः ॥

श्री सुखकर्ता दुखहर्ता

Sukhkarta Dukhharta — संपूर्ण पावन आरती पद, सरल हिंदी भावार्थ एवं विधि सहित

रचयिता: समर्थ रामदास स्वामी ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण पावन आरती पद (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

टेक

जय देव, जय देव, जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनकामना पुरती, जय देव जय देव ॥

भावार्थ: हे देव! हे मंगलमूर्ति श्री गणेश! आपकी जय हो, जय हो। आपके केवल दर्शन मात्र से ही भक्तों की समस्त मनोकामनाएं और मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

पद १

सुखकर्ता दुखहर्ता वार्ता विघ्नाची।
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची ॥
सर्वांगी सुंदर उटी शेंदुराची।
कंठी झळके माळ मुक्ताफळांची ॥
जय देव, जय देव, जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनकामना पुरती, जय देव जय देव ॥

भावार्थ: आप समस्त सुखों को प्रदान करने वाले और समस्त दुखों को हरने वाले हैं। आप जीवन से विघ्नों और संकटों की वार्ता (नामोनिशान) तक मिटा देते हैं। आपकी असीम कृपा भक्तों के हृदय में केवल अनन्य प्रेम का संचार करती है। आपके संपूर्ण पावन अंगों पर सिंदूर (शेंदूर) का सुंदर लेप सुशोभित है और आपके गले में मोतियों की दिव्य माला जगमगा रही है। हे मंगलमूर्ति, आपकी सदा जय हो।

पद २

रत्नखचित फरा तूज गौरीकुमरा।
चंदनाची उटी कुंकुमकेशरा ॥
हिरेजड़ित मुकुट शोभतो बरा।
रुणझुणती नूपुरे चरणी घागरीया ॥
जय देव, जय देव, जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनकामना पुरती, जय देव जय देव ॥

भावार्थ: हे माता पार्वती के नंदन (गौरीसुत)! आप रत्नों से जड़े दिव्य आभूषणों को धारण किए हुए हैं। आपके पावन विग्रह पर शीतल चंदन, कुमकुम और केसर का सुगंधित लेप लगा हुआ है। आपके मस्तक पर हीरों से जड़ा मुकुट अत्यंत शोभायमान हो रहा है और आपके श्रीचरणों में बंधी नूपुर तथा घुंघरू रुनझुन की मधुर ध्वनि कर रहे हैं। हे मंगलमूर्ति प्रभु, आपकी सदा जय हो।

पद ३

लंबोदर पीतांबर फणीवर बंधना।
सरळ सोंड वक्रतुण्ड त्रिनयना ॥
दास रामाचा वाट पाहे सदना।
संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे, सुरवरवंदना ॥
जय देव, जय देव, जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनकामना पुरती, जय देव जय देव ॥

भावार्थ: हे लंबोदर प्रभु! आप पीतांबर वस्त्र धारण करने वाले और नागराज को आभूषण रूप में धारण करने वाले हैं। आपकी सरल और वक्र (मुड़ी हुई) सूंड है तथा आप त्रिनेत्रधारी हैं। प्रभु श्रीराम के दास (समर्थ रामदास स्वामी अथवा शरणागत भक्त) अपने गृह-द्वार पर आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे देवताओं द्वारा पूजित भगवान! हर विपत्ति में हमारी रक्षा करें और अंत समय में भवसागर से पार उतारें। हे मंगलमूर्ति, आपकी सदा जय हो।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **पवित्रता एवं शुभ समय:** प्रातःकाल सूर्योदय के समय अथवा सायंकाल गोधूलि वेला में स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र (पीले या लाल वस्त्र विशेष उत्तम) धारण करें। बुधवार, संकष्टी चतुर्थी तथा विनायक चतुर्थी पर यह आरती विशेष रूप से फलदायी है।
- **आरती की थाली की सज्जा:** पीतल, तांबे या चांदी की थाली में शुद्ध गाय के घी का दीपक अथवा सुगंधित भीमसेनी कर्पूर सजाएं। साथ में रोली, चंदन, अक्षत, सुगंधित लाल पुष्प और गणेश जी को अत्यंत प्रिय **दूर्वा (दूब घास)** अवश्य रखें।
- **तुलसी दल का निषेध:** यह शास्त्रीय नियम सदैव स्मरण रखें कि भगवान गणेश की पूजा, भोग अथवा आरती में कभी भी **तुलसी पत्र** का प्रयोग नहीं किया जाता।
- **आरती की थाली घुमाने का क्रम:** आरती की थाली को भगवान गणेश के चरणों में चार बार, नाभि मंडल के सामने दो बार, मुखारविंद के सम्मुख एक बार तथा संपूर्ण दिव्य विग्रह के समक्ष सात बार घड़ी की सुई की दिशा (Clockwise) में ॐ की आकृति बनाते हुए घुमाएं।
- **भोग एवं समर्पण:** आरती संपन्न होने पर मोदक, मोतीचूर के लड्डू अथवा मौसमी फल का भोग लगाएं। इसके पश्चात दोनों हाथों से आरती की पावन लौ को शीश पर धारण करें और सभी भक्तों में प्रसाद वितरित करें।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **समस्त विघ्नों और संकटों का समूल नाश:** *"सुखकर्ता दुखहर्ता वार्ता विघ्नाची"* — भगवान गजानन की कृपा से जीवन की कठिन से कठिन रुकावटें, पारिवारिक क्लेश और व्यावसायिक बाधाएं समाप्त हो जाती हैं और विघ्नों का नामोनिशान भी नहीं रहता।
- **असीम ईश्वरीय प्रेम और कृपा की प्राप्ति:** *"नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची"* — नित्य आरती गान करने से साधक के हृदय में प्रभु के प्रति अनन्य भक्ति और निष्काम प्रेम का प्राकट्य होता है, जिससे मन शांत और तनावमुक्त रहता है।
- **मनोकामनाओं और सात्विक संकल्पों की सिद्धि:** *"दर्शनमात्रे मनकामना पुरती"* — श्रद्धा और एकाग्रता से आरती करने पर केवल मंगलमूर्ति के मानसिक दर्शन मात्र से ही जीवन के सभी शुभ संकल्प और अभीष्ट मनोरथ सिद्ध होते हैं।
- **विपत्तियों में अभय और मोक्ष की प्राप्ति:** *"संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे"* — भगवान गणेश हर विपत्ति में अपने भक्त की ढाल बनकर रक्षा करते हैं और अंत समय में भवसागर से पार उतारकर परम पद प्रदान करते हैं।
- **बुद्धि, विवेक और गृह समृद्धि का वास:** *"रत्नखचित फरा तूज गौरीकुमरा"* — माता पार्वती के लाड़ले गौरीसुत की नित्य स्तुति से घर में दरिद्रता का नाश होता है तथा विद्या, बुद्धि और रिद्धि-सिद्धि का स्थायी वास होता है।